231
810
H
P
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
1532/70121
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 810

891.431
P192S

Govt of U.P. No. 6
in Hindi
1 copy
Swarajiya ka Bigul

स्वराज्य का बिगुल

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
15 AUG. 1932
214

संग्रहकर्ता:—

पं० नित्यानन्द पाण्डेय
हारमोनियम मास्टर
देहरादून।

प्रकाशक:—

पं० हरिदत्त उपाध्याय
एम० एस० सी०
देहरादून यू० पी०।

प्रथमबार १००० प्रति ‖ संवत् १९८८ वि० [मूल्य -)॥

यदि आप विवाहोत्सव आदि शुभ अवसरों

को

सफल और रोचक करना चाहते हैं

तो

हमारी गायन-पार्टी

को आमंत्रित करके ईश भक्ति, देश भक्ति से परिपूर्ण धार्मिक गायनों द्वारा अपने अभिभावकों का चित्त प्रसन्न कीजिये।

और

यदि आप संगीत सुधा का पान करना चाहते हैं और संगीत विद्या का ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं तो हम आपके ही घर पर आकर हारमोनियम, तबला और गायन की विधि पूर्वक शिक्षा दे सकते हैं। विशेष अवसर पर हम अपने ही स्थान पर भी शिक्षा देने का प्रबन्ध कर सकते हैं।

निम्न लिखित पते से बातचीत करें।

विनीतः—

नित्यानन्द पाण्डेय

C/o अभय प्रेस

देहरादून।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 810
Date 21.12.71
GOVT. OF INDIA

❁ प्रार्थना ❁ ।

प्राण प्यासे हैं मेरे बांसुरी वाले आजा ।
नाव मंझधार में है नाथ बचाले आजा ॥

बल है निर्बल का तुही धन है तुही निर्धन का ।
जग का जीवन है ओ जीवन के उजाले आजा ॥

होता जाता है दिनोंदिन तेरा गोकुल ऊजड़ ।
अपने उस धाम को फिर धाम बना ले आजा ॥

अब भी शिशुपाल से फिरते हैं अनेकों पामर ।
फिर उसी चक्र सुदर्शन को संभाले आजा ॥

आज भी देवकी भारत की है बन्धन में दुखी ।
शीघ्र आजा उसे बन्धन से छुड़ा ले आजा ॥

तेरा 'निर्गुण, तुझे ढूंढे है सुदामा बनकर ।
आप आकर उसे छाती से लगाले आजा ॥

वन्देमातरम् ।

सुजलां, सुफलां, मलयज शीतलाम्,
शस्य श्यामलाम् मातरम् वन्दे० ।
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्,
फुल्ल कुसुमित, द्रुमदल शोभनीम् ।
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्,
सुखदां वरदां मातरम् वन्दे० ॥
त्रिंश कोटि कंठ कलकल निनाद कराले
द्वित्रिंश कोटि भुजैर्धृत खर करवाले ।
के बोले मां तुमि अबले ?
बहु बल धारिणीम्, नमामि तारिणीम् ।
रिपुदल वारिणीम् मातरम्-वन्दे० ॥
श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्,
धरणीम् भरणीम् मातरम् वन्दे० ॥

भारत का राष्ट्रीय झण्डा ।

प्रेमिक विश्व तिरङ्गा प्यारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥
सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला ।
वीरों को हरषाने वाला, मातृ भूमि का तन मन सारा ॥ झंडा० ॥
स्वतन्त्रता के भीषण रण में, लख कर बढ़े जोश क्षण क्षण में ।
कांपे शत्रु देख कर मन में, मिट जावे भय संकट सारा ॥ २ ॥

इस झण्डे के नीचे निर्भय, लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय।
बोलो भारत माता की जय, स्वतन्त्रता हो ध्येय हमारा॥ ३॥

आवो प्यारे वीरो! आवो, देश धरम पर बलि बलि जाओ।
एक साथ सब मिलकर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा॥ ४॥

इसकी शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये।
विश्व मुग्ध करके दिखलाये, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा॥ ५॥

जननि तेरी जय हो।

भारत जननि तेरी जय तेरी जय हो।
जय हो विजय हो जय हो विजय हो॥
तू शुद्ध और बुद्ध तू प्रेम आगार।
तेरो विजय सूर्य माता उदय हो॥
गान्धी रहें और तिलक फिर से आवें।
आज़ाद मोती जवाहर की जय हो॥
हों भीष्म सम वीर अर्जुन समां वीर।
राणा शिवाजी का फिर से उदय हो॥
तेरे लिये जेल हो स्वर्ग का द्वार।
बेड़ी की झन झन में वीणा की लय हो॥
आवें पुनः कृष्ण देखें दशा तेरी।
सरिता सरों में भी बहता प्रणय हो॥

कहता 'खलील' आज हिन्दू मुसल्मां ।
बोलें सभी मिल जननि तेरी जय हो ॥

स्थायी — तुम्हारी आज यही पहिचान ।
चाहती हैं माता बलिदान ॥

धनी जनों सम्पति लगादो,
बली लगा दो जान ।
विद्वानों तुम बुद्धि लगाकर,
रखलो भारत मान ॥ तुम्हारी० ॥
मारग में हों कष्ट उन्हें तुम,
सहलो फूल समान ।
प्राण जायं तो जायं न जावे,
किन्तु हिन्द की शान ॥ तु० ॥
हिन्द हमारा देश हिन्द ही,
धर्म सुखों की खान ।
रहा हिन्द तो जन्म सुफल,
नहिं जीवन है पाषान ॥ तु० ।
माधव तजो हिन्द हित अग सुख,
सेज खान और पान ।
जब लों न होय स्वतन्त्र तुम्हारा,
प्यारा हिन्दोस्तान ॥ तुम्हारी०

है मरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ।

अधीन होकर बुरा है जीना,
है मरना अच्छा स्वतन्त्र होकर।
सुधा को तज कर ज़हर का प्याला,
है पीना अच्छा स्वतन्त्र होकर॥
पड़ी हों हाथों में हथकड़ी यदि,
तो स्वर्ग के सुख से काम क्या है॥
नरक के दुख में निवास निशदिन,
है करना अच्छा स्वतन्त्र होकर।
जो दास बन कर मिले भवन में,
सो स्वादु भोजन तो तुच्छ हैं सब॥
सदैव उपवास करके बन में,
विचरना अच्छा स्वतन्त्र होकर।
मिलें उपाधि या मान पदवी,
जो सेवा करके तो व्यर्थ हैं सब।
घृणा के गढ्ढे में होके "व्याकुल,"
उतरना अच्छा स्वतन्त्र होकर॥

बनो अब सत्याग्रही महान।

उठो! उठो!! हे वीर बन्धुवर! धरो देश का ध्यान।
वीरो अब तुम त्यागी बन कर करो देश का कल्याण॥ १॥

हिंसा हीन वृत्ति को धारो, रख कर मन में आन।
खद्दर का दृढ़ कवच पहन कर, करो युद्ध घमसान ॥ २ ॥
बालक वृद्ध जवान सभी में, हो ऐसा अभिमान।
मरें मिटें सब करें देश हित, न्यौछावर तन प्रान ॥ ३ ॥

"माधवप्रसाद शुक्ल"

श्री कृष्ण और महात्मा गांधी की तुलना
वह मोहन यह मोहन

दोहा—उठी लेखनी आज फिर, लेकर यह अभिमान।
मोहन मोहन दास का, करना है गुण गान ॥
दोनो आये मेटने इसी देश के त्रास।
वह केवल मोहन रहे यह हैं मोहन दास ॥

वह ब्रज विख्यात विहारी थे,
यह भी गुजरात विहारी हैं।
वह चक्र सुदर्शन धारी थे,
तो यह भी तकली धारी हैं।
वह काली कमली वाले थे,
यह खादी में दिखलाते हैं।
वह बंशी मधुर बजाते थे,
यह चर्खा खूब चलाते हैं ॥

वह प्रगटे काराग्रह में थे,
यह वासी काराग्रह के हैं ।
वह सूत्र महाभारत के थे,
यह नेता सत्याग्रह के हैं ॥
वह दूध गाय का पीते थे,
इनको बकरी का भाया है ।
गोवर्द्धन उधर उठाया था,
भारत को इधर जगाया है ॥
वह मथुरा से द्वारका गये,
यह अफ्रीका रह आये हैं ।
वह माखन चोर कहाते थे,
यह नमक चोर कहलाये हैं ॥
उनका भी भक्त जमाना था,
इनका भी भक्त जमाना है ।
उन मोहन का वर्साना था,
इन मोहन का धर्साना है ॥
उस समय भी भारत था निर्भय,
इस समय भी भारत है निर्भय ।
इस कारण राधेश्याम कहो,
सब मिलकर मोहन दास की जय ॥

॥ गाढ़ा ॥

किसी को जहां में बनायेगा गाढ़ा।
किसी को जहां से मिटायेगा गाढ़ा॥
तरक्की पर अपनी जब आयेगा गाढ़ा।
तो हर सिम्त जल्वा दिखायेगा गाढ़ा॥
अदायें कुछ ऐसी दिखायेगा गाढ़ा।
हसीनों के दिल को लुभायेगा गाढ़ा॥
हुकूमत ने बे वालों पर कर दिया है।
अब हमको यह ऊपर उड़ायेगा गाढ़ा॥
विदेशी को त्यागो स्वदेशी को पहनो।
गुलामी से तुमको छुड़ायेगा गाढ़ा॥
न डर "नाज़" गाढ़ा पहनने से हर्गिज़।
बला बनके तुमको न खायेगा गाढ़ा॥

निशाना पड़ेगा।

तुम्हें अब तो चरखा चलाना पड़ेगा।
मुसीबत से भारत बचाना पड़ेगा॥
यही तोप मैशीगन है तुम्हारी।
दुश्मनों को इसी से हराना पड़ेगा॥

कहां तोपे-जर्मन है इसके मुकाबिल।
अब गोला यहां से हमारा पड़ेगा॥
चलावो जो चर्खा यहां बैठे बैठे।
किला मान्चेस्टर निशाना पड़ेगा॥
अहिंसा के संग्राम का मूल मन्तर।
कवच खादी से तन ढकाना पड़ेगा॥
खरीदो न बेचो बिदेशी को हर्गिज।
गुलामी में सिर न झुकाना पड़ेगा॥

रिस्तेदार बैठे हैं।

यहां हम जेल जाने के लिये तय्यार बैठे हैं।
खुदा जाने ये हाकिम क्यों किये इनकार बैठे हैं॥ १॥
ठसाठस जेलखाने भर गए हैं आज भारत के।
न कम्बल हैं न तसले हैं दिवाला काढ़ बैठे हैं॥ २॥
न ज्यादा दिन सही कुछ दिन को ही करवादो मेहमानी।
बने वालिंटियर लाखों ये रिश्तेदार बैठे हैं॥ ३॥
मुसीबत है न चक्की की न खटका मूंज बटने का।
यहां सीने पै गोलों की, लिये बौछार बैठे हैं॥ ४॥
हमारे फील्ड मार्शल ने अजब स्कीम सोची है।
वह बैठे ही रहेंगे जो लिये तलवार बैठे हैं॥ ५॥

खिलाड़ी लार्ड इर्विन से भी खेले खेल पर अब तो।
लंगोटी बाज गांधी से, वह बाजी हार बैठे हैं ॥ ६ ॥

('वर्तमान' की पुरानी फाइल से।)

ससुराल के अन्दर साहब

जेलखाने का नहीं कुछ भी हमें डर साहब।
कौन जाता नहीं ससुराल के अन्दर साहब ॥
आप वारन्ट दिखाकर मुझे धमकाते हैं।
कौन डरता है भला वक्त लगन पर साहब ॥
हथकड़ी शौक से पहनाओ मेरे हाथों में।
रस्मे कंगन का हुआ करता है घरघर साहब ॥
जेल में बन्द करो होगा भला क्या इससे।
कौन डरता है कहो बारात के अन्दर साहब ॥
बैंत लगाने से नहीं होवेंगे मुन्किर हर्गिज।
रस्मे सन्दी का अदा कीजिये डटकर साहब ॥
हम आये हैं तेरे दर पै बराती बनकर।
लेकर जायेंगे दुलहन फिर के न जायें साहब ॥

——गोकुल।

फांसी दिला सकोगे।

चलोगे चर्खा हर एक घर में, तो सर्व तब तुम हिला सकोगे।
बंधा तभी सिलसिला सकोगे, उन्हें कबड्डी खिला सकोगे॥

हमारे चर्खे में ऐसा फन है जो आज कल की मशीन गन है।
वह मानचेस्टर और लङ्काशायर, का जीत जिससे किला सकोगे॥

रुई न भारत की हो रवाना, बने स्वदेशी का ताना बाना।
इसी तागे से विदेशी वाणिज, को आप फांसी दिला सकोगे॥

न पट विदेशी का लो सहारा, शरीर चाहे रहे उघारा।
बचें बहत्तर करोड़ रुपया, तो अपने बच्चे जिला सकोगे॥

मिलालो भाई गले लगा के, सबक स्वदेशी का तुम पढ़ा के।
विदेशी चीजों को दो हटा के, तो चैन वर्न्सी बजा सकोगे॥

वीर जवाहर ने

भारत का डंका आलम में बजवाया वीर जवाहर ने।
स्वाधीन बनो स्वाधीन बनो समझाया वीर जवाहर ने॥
यह लाल जो मोतीलाल का है और लाल दुलारा भारत का।
सोते भारत को हद करके जगवाया वीर जवाहर ने॥
अंग्रेजों की मृगतृष्णा में भूले थे भारतवासी सब।
पूरी आज़ादी का मन्तर सिखलाया वीर जवाहर ने॥

दे दे स्पीचें जिन्दादिल कमजोरी दूर भगा दी सब।
रग रग में खूं आजादी का दौड़ाया वीर जवाहर ने ॥
घोटी है राजनीति जिसने छानी है खाक विदेशों की।
समता स्वतंत्रता का मारग दिखलाया वीर जावहर ने ॥
हिन्दू मुस्लिम जैन इसाई पारसी सब भाई भाई हैं।
सब ऊंच नीच का भेद भाव मिटवाया वीर जवाहर ने ॥
इक रोशन आग धधकती है आजादी की उनके दिल में।
जिससे मुर्दों का मुर्दा दिल चमकाया वीर जवाहर ने ॥
नव युवक करोड़ों भारत के भूले थे भोग विलासों में।
युवकों की शक्ति को एक दम उकसाया वीर जवाहर ने ॥
आदर्श चरित से वह अपने युवकों का सम्राट बना।
आजादी का ऊंचा झंडा लहराया वीर जवाहर ने ॥
गांधी जी आशिष दे बोले खुद क्लर्क बनूगा मैं तेरा।
तब सेहरा राष्ट्रपति का सिर बंधवाया वीर जवाहर ने ॥
लख कर प्रकाश यह भारत का अचरज में डूबी है दुनिया।
कांग्रेस को करके मुठी में मुस्काया वीर जवाहर ने ॥

आजाद करो

भारत के वीरो भारत को आजाद करो आजाद करो।
इस फैशन से मत घर को बरबाद करो बरबाद करो ॥

अब देश तुम्हारा है उजड़ा और काम तुम्हारा है सब बिगड़ा।
इस उजड़े भारत को अब तुम आबाद करो आबाद करो ॥
तुम ऋषियों की सन्तान हो तुम तो देशपै अब बलिदान हो तुम।
अपने बल पौरुष की अब तुम कुछ याद करो कुछ याद करो ॥
लाखों जन भूखों मरते हैं और आह तलक नहीं करते हैं।
कुछ गौर से अपने भाइयों की इम्दाद करो इम्दाद करो ॥
अब द्वेषभाव को छोड़ो तुम और तौके गुलामी तोड़ो तुम।
जिस तरह से होवे उसी तरह इत्तिहाद करो इत्तिहाद करो ॥
जो वीर देशहित मरते हैं वह अमर सदा ही रहते हैं।
इस बात 'शुक्ल' की पर प्यारो इत्तफाक करो इत्तफाक करो ॥

भजन।

मन के मन्दिर में बसा ले मूरती घनश्याम की।
पूजा कर प्रेमी पुजारी पूजा प्रभु के नाम की ॥
जात पर नहीं रीझता ये बात है उस तात की।
बेर चाखे भीलनी के नीचनी किस काम की ॥
राव हो के रंक हो, हो प्रेम भगवत् भक्ति का।
सच्चे मन से जो कोई आवे शरण भगवान की ॥
दुष्ट दुश्शासन सभा में नग्न जब करने लगा।
पत राखी प्रभु ने विपत में दीन द्रौपदी बाम की ॥

मान कर अपमान दुर्योधन की मेवा त्याग करा।
शाक खाया विदुर घर भक्ती थी आठों याम की॥
कच्चे भक्त के प्रेम में प्रभु कच्चे ताण्डुल खा गये।
आज तक मशहूर है महिमा सुदामा धाम की॥
नाम क्या अपना बतावें जब के हैं निष्काम खुद।
आप ही बाकी रहेगी कीर्ति गुमनाम की॥

भारत-भक्त।

बनेंगे हिन्द के योगी धरेंगे ध्यान भारत का।
उठा कर भक्ति का झन्डा करें उत्थान भारत का॥

गले में शील की माला पहिन कर ज्ञान की कफनी।
पकड़ कर त्याग का डंडा रखेंगे मान भारत का॥

जला कर कष्ट की होली उठा कर कष्ट की झोली।
जमा कर सन्त की टोली करेंगे गान भारत का॥

तजें सब लोक की लज्जा तजें सुख भोग की शय्या।
न छोड़ें बान ऋषियों की जो है विद्वान भारत का॥

न है सुख भोग आकांक्षा न है धन मान की इच्छा।
न है संसार की वांछा चहें सम्मान भारत का॥

स्वरों में तान भारत की है मुख में गान भारत का।
नसों में रक्त भारत का उदर में प्राण भारत का॥

हमारे जन्म का सार्थक हमारे मोक्ष का आरम्भ ।
हमारे लक्ष्य में वह हो बने उत्थान भारत का ॥

वीर कहां हैं ।

भारत में महावीर सा अब वीर कहां है ।
संसार में श्रीराम सा गंभीर कहां है ॥
धर्मी न युधिष्ठिर सा न विक्रम सा न्यायाधीश ।
श्री कृष्ण सा कोई साहबे तौकीर कहां है ॥

बाली सा बली और न बली सा कोई दाता ।
दुनिया में परशुराम सा रणधीर कहां है ॥
नहीं भीष्म कर्ण द्रोण भीम सा है बहादुर ।
अर्जुन से धनुषधारी का वह तीर कहां है ॥

सत्यवादी हरिश्चन्द्र ज़माने में है मशहूर ।
दुर्वासा सी जबान में तासीर कहां है ॥
ज्ञानी न जनक, व्यास, शुक, नारद, वशिष्ठ सा ।
गौतम सा गुरु मोरध्वज सा धीर कहां है ॥

प्रहलाद ध्रुव हनुमान कहां भक्त जहां में ।
गोरख सा योगी दत्त सा कोई पीर कहां है ।
आचारी न शंकर सा न स्वामी सा दयालु ।
नानक निडर कबीर सा फकीर कहां है ॥

तुलसी सा गुनी शूर बाल्मीकि सा भजनीक।
कवि कालिदास भोज सा मतिधीर कहां है॥
सूरत न सही उनकी सी सीरत नसीब हो।
"जौहर" तेरी तकदीर में तदबीर कहां है॥

बहनोरी करलो सच्चा शृङ्गार॥

जिस शृङ्गार से प्रभु मिल जावे, सबका प्राणाधार।
जिस भूषण से होवे न दूषण, करो उसी से प्यार॥
बहनों० ॥
सच्चा भूषण वह विद्या है, लूटे न चोर चकार।
न वह टूटे न वह फूटे, जिसका लगे न भार॥
बहनों० ॥
पति के प्रेम की माला पहिनो सेवा समझ को हार।
धर्म चर्चा की चूड़ी समझो, आरसी तत्व विचार॥
बहनों० ॥
पति की आज्ञा को नथ समझो, भक्ति को कंगन जान।
ब्याह के प्रथम हंसली सो हंसली, शील को हंसली जान॥
बहनों० ॥
विद्या धर्म दो झूमके बनाओ, टीका पर उपकार।
बिन्दी वन्दना स्वामि की करना, ज्ञान का सुर्मा डार॥
बहनों० ॥
मुकुन्द कहे सब सुखी रहोगे, मान करे संसार॥
बहनों०।

जन्टलमैनों से दो बात—

दो०—फैशन की अलसेट में, पड़े हैं जन्टल मैन।
पल भर भी फैशन बिना, इनको नहीं है चैन॥
देश कौम अरु धर्म की, कहां उन्हें परवाह।
जिनके दिल में गड़ चुकी, इक फैशन की चाह॥

नख से शिख तक फैशन में चूर क्या फैशन के दिल दादा हैं।
ज्यों २ घर लुटता जाता है त्यों २ ये और जियादा हैं॥

ईमान या मान बला से हो घर जले या देश कलंकित हो।
भाई मरते हों भूखों से चाहे घर वाली पीड़ित हो॥
हो कर्म धर्म से पतित चाहे सम्पति भी सारी लुट जाये।
हर्गिज पर जन्टुलमैनी में कुछ फर्क नहीं आने पाये॥
बदनाम बड़ों का नाम करें फिर भी निर्दोष कहाते हैं।
ठोकर पर ठोकर लगती है फिर भी इतराये जाते हैं॥
सर है पर अक्ल नहीं सर में दिल है पर दर्द से खाली।
जल बिना सरोवर हो जैसे ज्यों बिना फूल के डाली है॥
अपनी असलियत को भूल गये योरोप का स्वांग बना बैठे।
निज लाज काज को छोड़ दिया दाढ़ी और मूंछ कटा बैठे॥
डासन का बूट योरोप का सूट सजकर होटल में जाते हैं।
वहां मटन चाप कटलस कबाब कुत्तों की तरह चबाते हैं॥

मुर्दों को हिन्दू जहां, समझें छूना पाप।
उस मुर्दे की पेट में, कब्र बनाव आप॥

जैसा अन्न खाये बने, वैसा मन और देह।
जो बोइये सो काटिये इसमें नहीं सन्देह॥

अपनी भाषा अपना भूषण अपना शुद्ध भोजन छोड़ दिया।
बस हिन्दू धर्म के बन्धन को फैशन में पड़ कर तोड़ दिया॥
अब कर्म्म धर्म्म से पतित हुए तो मान भी अपना खो बैठे।
अब दिस्तनगर है गैरों के सम्पत्ति भी अपनी खो बैठे॥
घर का खाना घर की जोरू यक आंख उन्हें नहीं भाते हैं।
घर माखन दूध को लात मार होटल में चाय उड़ाते हैं॥
यारो क्यों डूबे जाते हो संभलो कुछ होश करो जागो।
बुरी विदेशी रस्मों को तुम मर्द बनो जल्दी त्यागो॥
ये फूल है या अङ्गार है इसका नहिं कुछ अन्दाज किया।
इस फीकी जन्टलमैनी ने भारत का सत्यानाश किया॥

पैंट सर्ट जैकट सजा बूंट लिया चमकाय।
टाई को टाइट किया, कालर लिया लगाय॥

मूंछों का करने लगे, सफाचट मैदान।
बाल बनाकर बन गये, योरोप की सन्तान॥

मखमल मलमल चाइना, अतलस और किमखाब।
इत्यादि धारण करा, देश को किया खराब॥

पतलून ने पतला खून किया जैकेट ने जकड़ा खूब हमें।
बिमुख हम धैर्य्य से हो बैठे जब बूंट हुआ मरगूब हमें॥
टाई ने टेढ़ा चलन किया, कालर ने कौलरा फैलाया।
जब मूंछ मर्द की काट दई तो नाम मर्दों का शर्माया॥

फैशन के बाल संवार लिये औरत की शक्ल बना बैठे ।
इस नई रोशनी के अन्धे भारत की नाक कटा बैठे ॥
मलमल ने हमको मल डाला, लट्ठे ने लट्ठ का काम किया ।
मख़मल ने खाल उतारी है, किमख्वाब ने ख्वाब हराम किया ॥
खासे ने खास निरादर को चैना ने चैन उजाड़ा है ।
और चिकन ने चकनाचूर किया अतलस ने अति लताड़ा है ॥
डोरिये ने डोर गुलामी की भारत के गले में डाली है ।
अफसोस इस जैन्टुलमैनी ने कर दी कितनी पैमाली है ॥

इस पर भी समझें नहीं, अपने भारती वीर ।
अधिक और हम क्या कहें, फूटी है तकदीर ॥

जन्टलमैनी को तजो, बनो स्वदेशी मैन ।
तब भारत के हृदय में, आवेगा कुछ चैन ॥

ऐ भारत के प्रेमियों, तुम्हें नहीं कुछ लाज ।
मर कर भी हो कफन को, गैरों के मुहताज ॥

गर भारत के सच्चे सुपूत तुम भी कहलाना चाहते हो ।
गर्दन से तौक गुलामी का गर दूर हटाना चाहते हो ॥
गर उजड़े पुजड़े भारत को सरसब्ज बनाना चाहते हो ।
या सुख सम्पत्ति की देवी को फिर वहां बुलाना चाहते हो ॥
इज्जत बेकार दौलत करार फिर से बहार पर आ जाये ॥
हिन्दुस्तान का जीवन भी फिर से बहार पर हो जाये ॥
अपनी कमजोरी कम हिम्मती कमजर्फी को सदचाक करो ।
जन्टल मैनी को छोड़ छाड़ नटखट का झगड़ा पार करो ॥

गाढ़ी कमाई गर अपनी है तो लेकर उससे गाढ़ा पहिनो।
बस इतना कहना काफी है खद्दर पहिनो गाढ़ा पहिनो॥

लाख बात की बात बस, कहे एक ही बात।
अपनी अपनी लाज है, अपने अपने हाथ॥

राम नाम की महिमा।

ऐसो जी सन्तो राम नाम रसखान।
मूरख याको मरम न जाने पीवैं चतुर सुजान।
याही में राधे श्याम स्वतः सिद्ध रास करें।
याही में हरिहर ब्रह्मा हू निवास करें॥

याही में तीन लोक चौदह भुवन वास करें।
याही को चार वेद षट शास्त्र भाष करें॥
याही सों काल क्रूर यमदूत त्रास करें।
याही सों अग्नि सूर्य्य चन्द्रमा प्रकाश करें॥

याही की ऋषि मुनि योगी जन उपास करें।
गावत सभी पुराण। सन्तो राम नाम रस खान॥

मूरख याको मरम न जाने पीवैं चतुर सुजान।
शेष और गणेश जी ने याको पियो घोल घोल॥

सनकादिक ऋषियन ने याको खोल खोल।
शारद ने नारद ने याको बोल बोल॥

बामदेव शुकदेव ने याको पियो छोल छोल ।
वाल्मीकि व्यास जी ने याको पियो तोल तोल ॥
पार्वती शंकर ने पियो याको घोल घोल ।
गोपीचन्द भरथरी ने पियो याको डोल डोल ॥
रोल रोल पियो हनुमान । सन्तो रामनाम० ॥

मूरख याको मरम न जाने पीवें चतुर सुजान ।
याही के प्राप्त भये प्राप्त होय धन धाम ॥
याही के मान किये लोकन में होय मान ।
याही के कंठ धरे थिर हों ये मन प्राण ॥
याही के सिद्ध किये सिद्धन बस होय आन ।
याही के ध्यान धरे होय है स्वरूपवान ॥

याही के ज्ञान हुये उदय होय ब्रह्मज्ञान ।
याही के पान किये अमृत को होय पान ॥
अन्त होय निर्वान । सन्तो रामनाम रसखा० ।
मूरख याको मरम न जाने पिवें चतुर सुजान ॥

याही को शीश धरो सन्तन की सीख मान ॥
याही को विश्वास करो बुद्धि सों छान छान ।
याही को नियम करो प्राणन को तान तान ॥

याही को फूंक दियो गुरुदेव खोल कान
याही में प्रेम बढ़ो भक्ता को तत्व जान ॥
याही दृढ़ भूत भयो अनुभव सूझनि ठान ।
याही में मग्न रहूं ऐसी पड़ गई बान ॥

"निर्भय राम" प्रमाण । सन्तो रामनाम० ।
मूरख याको मरम न जाने पीवें चतुर सुजान ॥

गान्धी जी अवतार तुम्हीं हो ।

साबरमती के सन्त हो सर्कार तुम्हीं हो ।
संसार के सत्याग्रही सर्दार तुम्हीं हो ॥
देखा नहीं जिन्होंने है एक बार भी तुम्हें ।
रहते जवां पै उनकी भी हर बार तुम्हीं हो ॥
पैंतीस कोटि तार लिये एक तार में ।
हर तार तार तार के कर्त्तार तुम्हीं हो ॥
दीनों में दीन हीन हो दुखियों में दुखी हो ।
धनिकों में धन कुबेर के भण्डार तुम्हीं हो ॥
देवों में, देव, देवता, ऋषियों में ऋषि अहो ।
भारत के पूज्य गान्धी जी अवतार तुम्हीं हो ॥
जपता है नाम 'अम्बे' सदा हीय हर घड़ी ।
भारत के भूमि भार हरण हार तुम्हीं हो ॥

गजल ।

चुन चुन के फूल लेलो अरमान रह न जाये ।
यह हिन्द का बगीचा गुलदान रह न जाये ॥
यह धो चमन नहीं है लेने से होवे ऊजड़ ।
उल्फत का जिसमें कुछ भी अहसान रह न जाये ॥
छल और फरेब से तुम भारत का माल लूटो ॥
इसके गुज़र का कोई सामान रह न जाये ॥
कर दो जबान बन्दी जेलों में चाहे भेजो ।
माता पै होता कोई कुर्बान रह न जाये ॥
गोली से चाहे मारो या बोलो मार्शलला ।
ईसामसीह की भी कुछ आन रह न जाये ॥

सरकार दो सौ साल में ।

क्या किया है आपने सरकार दो सौ साल में ।
किस मुरव्वत का किया इजहार दो सौ साल में ॥
हाँ किया इतना तो भारत की तिजारत का भला ।
सर्द कर दी गर्मियें बाजार दो सौ साल में ॥
आज तक जाहिल करोड़ों हिन्द के बच्चे रहे ।
ये तरक्की की रफ्तार दो सौ साल में ॥

ढाके ढाके की जगह मानचेस्टर रख दिया।
जब ते भारत हुई मुर्दार दो सौ साल में ॥
जुल्म का कुचला हुआ अगियार का रौंधा हुआ।
और भी भारत हुआ बीमार दो सौ साल में ॥
ले लिया मजबूर हो गान्धी ने चप्पू हाथ में।
कर सके अब तुम न बेड़ा पार दो सौ साल में
दो महीनों में ही जो कर लेगी गान्धी की स्कीम
कर सकी हर्गिज न वो तलवार दो सौ साल में ॥
सानी जयचन्द के जहां में कोई भी थोड़े न थे
और पैदा कर दिये गद्दार दो सौ साल में ॥
कैद में उम्मीद की बैठे रिहाई की मगर
कुछ नहीं आये नजर आसार दो सौ साल में ॥
सूरत आजादी की आनी किस तरह हम को नजर
और ऊंची खींचदी दीवार दो सौ साल में ॥
सारी दुनियां से गुलामी मिट गई लेकिन यहां।
आप लेते ही रहे बेगार दो सौ साल में ॥

अभिलाषा।

गजल।

वतर्ज—तुझे ढूंढ ही लेंगे कहीं न कहीं।

मेरी जां न रहे मेरा सर न रहे,
सामांन रहे न ये साज रहे।

फ़कत हिन्द मेरा आज़ाद रहे,
माता के सर पर ताज रहे ॥
पेशानी में सोहें तिलक जिसकी,
और गोद में गान्धी विराज रहे ।
न दाग़ बदन में सुफेद रहे,
न तो कोढ़ रहे न ये खाज़ रहे ॥
मेरे हिन्दू मुसल्मां एक रहें,
भाई भाई सा रस्मो रिवाज़ रहे ।
मेरे वेद पुराण कुरान रहें,
मेरी सन्ध्या पूजा निमाज़ रहे ॥
मेरी टूटी मढ़ैया में राज रहे,
कोई गैर न दस्तन्दाज रहे ।
मेरी बीन के तार मिले हों सभी,
एक झीनी मधुर आवाज रहे ॥
ये किसान मेरे खुशहाल रहें,
पूरी हो सफ़ल सुख साज रहे ।
मेरे बच्चे वतन पै निसार रहें,
मेरी माँ बहिनों में लाज रहे ॥
मेरी गाय रहें मेरे बैल रहें,
घर घर में भरा नित नाज रहे ।
घी दूध की नदियां बहती रहें,
हरसू आनन्द सुराज रहे ॥

शर्मा की है चाह खुदा की क़सम
मेरे बाद वफ़ात ये याद रहे।
बाहे का कफ़न हो मुझपै पड़ा,
वन्देमातरम् अल्फ़ाज़ रहे ॥

दिल अज़मा रहे हैं।

न हिन्दियो बेक़रार हो तुम,
कि नेक अय्याम आ रहे हैं।
वह जल्द मिट जायेंगे जहाँ से,
हमें जो ज़ालिम सता रहे हैं॥
न समझो हस्ती या बान उनको,
जो जेल में बंद रहे हैं कैदी।
वह आहनी तौक़ पापियों के,
गले की ख़ातिर बना रहे हैं॥
उधर से संगीने तन रही हैं,
इधर से सीने खुले हुये हैं।
इधर है चेहरों पर मुस्कराहट,
उधर वह गोली चला रहे हैं॥
इधर इरादा यह कर चुके हैं,
क़दम न पीछे हटायेंगे हम।

कभर वह लालच से धमकियों से,
हमारे दिल आज़मा रहे हैं ॥
खुदा को मंजूर अब यही है,
कि हिन्द में इन्क़िलाब होगा।
तब ही तो भारत के लाल खुश,
हो के जेलखाने को आरहे हैं ॥
थी जिसके क़दमों पै सारी दुनियां,
की न्यामतें दस्त बस्ता हाज़िर।
खुदा की कुदरत वह आज हंस हंस,
के खुश्क रोटी चबा रहे हैं ॥
अब वक्त स्वराज आ रहा है,
और लार्ड इरविन भी कह रहा है।
मगर 'मुसाफ़िर' को धोका देकर के
और मुद्दत बता रहे हैं ॥

हम सीना अड़ा देंगे।

ग़ज़ल

कसली है कमर अब तो कुछ करके दिखादेंगे।
आज़ाद ही हो लेंगे, या सर ही कटा देंगे ॥

हटने के नहीं पीछे, डर के कभी जुल्मों से।
तुम हाथ उठाओगे, हम पैर बढ़ा देंगे॥
बे शस्त्र नहीं हैं हम पर, बल है हमें चरखे का।
चर्खे से ज़मी का हम, चर्ख गुंजा देंगे॥
परवाह नहीं कुछ दम की, गमकी नहीं मातम की।
है जान हथेली पर, यक पल में गवां देंगे॥
उफ़ तक भी जुबां से हम, हर्गिज़ न निकालेंगे।
तलवार उठाओ तुम हम, सर को झुका देंगे॥
सीखा है नया हमने, लड़ने का तरीक़ा यह।
चलवाओ गन मशीनें, हम सीना अड़ा देंगे॥
दिलवादो हमें फांसी ऐलान से कहते हैं।
खूं से ही शहीदों के हम फ़ौज बना देंगे॥
'मुसाफिर' जो अन्डमन के तूने बनाये ज़ालिम।
आज़ाद ही होने पर हम उनको बुला लेंगे॥

बलिदान।

टेक } चाहती है माता बलिदान।
जवानों उठो हिन्द सन्तान॥

हंसते हुए फूल से आकर, शीश झुका दो मां के पग पर
करता है कर जाने दो सर तनिक न हो हैरान॥ १॥
चाहती है०

सोने वालो ! उठो कड़क कर, जागे हुए बढ़ो वेदी पर।
बूढ़ा हो नारी हो या नर, सबको है आवाहन ॥ २ ॥
चाहती है माता बलिदान।

हो चमार भंगी या पासी, विप्र पुजारी या सन्यासी।
धनी दरिद्री हो उपवासी, सबका भाग समान ॥ ३ ॥
चाहती है०

उठो अपढ़ मूरख विद्वानों, हिंदू मुसलिम और क्रिस्तानों।
जैन पारसी, सिक्ख महानों प्यारी माँ के प्रान ॥ ४ ॥
चाहती है०

ओ छात्रो ! भावी अधिकारी, उठो उठो शिक्षित व्यापारी।
उठो मजूरो दीन भिकारी, दुखी दरिद्र किसान ॥ ५ ॥
चाहती है०

हो गुलाम कैसा ही दागी, वर्तमान शासन अनुरागी।
नरम गरम वैरागी त्यागी, उठो सभी मतिमान ॥ ६ ॥
चाहती है०

स्वार्थ और मतभेद मिटाओ, वैर फूट को दूर भगाओ।
फहराओ तुम आज हिन्द में, इक जातीय निशान ॥ ७ ॥
चाहती है०

फांसी चढ़ो जेल में जाओ, भय बश कभी न देश भुलाओ।
हथकड़ियों पर मिलकर गाओ, स्वतन्त्रता का गान ॥ ८ ॥
चाहती है०

पूरन करो यज्ञ माता का, ज्यों प्रताप अभिमानी बांका।
ज्यों शिव सूर्य हिन्द गुरुता का, जैसे तिलक महान ॥ ९ ॥
चाहती है०

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 810
Date 21.1.2.7.1
GOVT. OF INDIA

मीठी झमक झङ्कार सुखारी, गान्धी वीणा की अति प्यारी।
'माधव' मस्त उठो दिखलादो, कानों में है जान ॥ १० ॥
चाहती है०

गान्धी बाबाने।

खादी का डंका आलम में, बजवा दिया गान्धी बाबा ने।
मैन्चेस्टर लङ्का शायर को, हिलवा दिया गांधी बाबा ने॥
देशी वस्त्रों को पहिनों तुम, छोड़ विदेशी कपड़ों को।
यह पाठ भली विधि से हमको, पढ़वा दिया गांधी बाबा ने॥
देशी धोती गांधी टोपी, खादी का कुरती और धोती।
ओढ़ना और बिछौना खादी का, चलवा दिया गांधी बाबा ने।
मनहूस विदेशी कपड़ों की, जलवादी भारत में होली।
शुभ चलन स्वदेशी खादी का, चलवादिया गांधी बाबा ने॥
जो पहन साड़ियां परदेसी, चलती थीं भारत की नारी।
खादी से उनका सुन्दर तन, सजवा दिया गांधी बाबा ने॥
सिर से पैरों तक है खादी, खादी के श्वेत समुन्दर से।
है आज ज़माने के दिल को, दहला दिया गांधी बाबा ने॥
खादी की शक्ति बम से भी, है अधिक काम करने वाली।
खादी का गोला भारत को, दिलवा दिया गांधी बाबा ने॥
अब त्यागो विदेशी वस्त्रों को, पहनो "दिनेश" देशी खादी।
खादी का झन्डा भारत में, गड़वा दिया गांधी बाबा ने॥

गले में झोली।

(श्री ओरेम् प्रकाश जी के कालेपानी जाते समय के उद्गार जिनको कविवर श्री रामप्रसाद बिस्मिल काल कोठड़ी के अन्दर गाया करते थे।)

गज़ल।

हैफ जिसपै कि हम तैयार थे मरजाने को।
जीते जी हमसे छुडाया उसी काशाने॥
आसमां क्या यही बाक़ी था ग़ज़ब ढाने को।
ढाके गुर्बत में जो रक्खा हमें तड़फाने को॥
क्या कोई और बहाना न था तरसाने को॥१॥

दिल फ़िदा करते हैं कुर्बान जिगर करते हैं।
पास जो कुछ है वह माता की नज़र करते हैं॥
खाने वीरान कहाँ देखिये घर करते हैं।
खुश रहो अहले वतन हमतो सफ़र करते हैं॥
जाके आबाद करेंगे किसी वीराने को॥२॥

देखिये कब यह असीराने मुसीबत छूटें।
मादरे हिन्द के अब भाग खुलें या फूटें॥
देश सेवक सभी अब जेल में मूंजें कूटें॥
आप यां ऐश से दिन रात बहारें लूटें॥
क्यों न तरजीह दें इस जीने पै मरजाने को॥३॥

हम भी आराम उठा सकते थे घर पर रह कर।
हमको भी पाला था मां बाप ने दुःख सह सहकर॥
वक्ते रुखसत उन्हें इतना भी न आये कहकर।
गोद में आंसू कभी टपके जो रुख से बहकर॥
तिफ्ल उनको ही समझ लेना जी बहलाने को॥४॥

देश सेवा ही का बहता है लहू नस नस में ।
अब तो खा बैठे हैं चित्तौड़ के गढ़ की कसमें ॥
सर फ़रोशी की अदा होती हैं यों ही रसमें ।
भाई ख़ंजर से गले मिलते हैं सब आपस में ॥
बहनें तैयार चिताओं में हैं जल जाने को ॥५॥

अपना कुछ ग़म नहीं लेकिन यह ख्याल आता है ।
मादरे हिन्द पै कब तक यह ज़वाल आता है ॥
क़ौम अपनी पै तो रो रो के मलाल आता है ।
मुन्तज़िर रहते हैं हम ख़ाकमें मिल जाने को ॥६॥

बात तो जब है कि इस बात की ज़िद्दें ठानें ।
देश के वास्ते क़ुर्बान करें सब जानें ॥
लाख समझायें कोई एक न उनकी मानें ।
कहता है ख़ून से मत अपना गरेबां सानें ॥
नास हो आग लगे तेरे इस समझाने को ॥७॥

अब तो हम डाल चुके अपने गले में झोली ।
एक होती है फ़कीरों की हमेशा बोली ॥
ख़ून से फाग रचायेगी हमारी टोली ।
जब से बङ्गाल में खेले हैं कन्हैया होली ॥
कोई उस दिनसे नहीं पूछता बरसाने को ॥८॥

नौ जवानों यही मौक़ा है उठो खुल खेलो ।
ख़िदमते क़ौम में जो आये बला तुम झेलो ॥
देश के सदक़े में माता को जवानी देलो ।
फिर मिलेगी न यह माता की दुअयें लेलो ॥
देखें कौन आता है इरशाद बजा लाने को ॥९॥

सन लाइफ़ एश्योरैन्स कम्पनी औफ़ कैनाडा

हेड आफिस फौर इन्डिया बम्बई

सूचना।

यदि आपने अपने जीवन का बीमा करा ना है और आप को एक शुद्ध बीमा कं० चाहिये, जो केवल जिन्दगी का काम करती है। दुनिया में सबसे बड़ी और भारतवर्ष में काम कर रही है वह यह सूर्य बीमा कम्पनी है। विशेष परिचय के लिये कृपया सूचित कीजिये तो आपको इसका पूर्ण विवरण भेज दिया जायगा।

सन् १६२६ का शानदार नतीजा

१९२९ में नई अजरा शुदा पालिसियों की संख्या	११६५२२ रु०
१९२९ में नई रकम बीमा ...	१७९३०१६८३० रु०
कुल रकम बीमा	६५७८७३१६०७ रु०
समस्त वर्ष की (आय) आमदन ...	४८३९३८६१८ रु०
कुल रकम जो पालिसी होल्डरों को मयाद की समाप्ति पर या उनके उत्तराधिकारियों को दी गई।	१९३३७१०८० रु०
कुल रकम जो कम्पनी के आरम्भ से १९२९ की समाप्ति तक दी जा चुकी है	१२३४४३६५३० रु०
कुल फण्ड	१४९०६५६२६७ रु०
सर्पुलस (रिजर्व) कंटिन्जैंसी फंड ...	११९४७३३२१ रु०
सिक्योरिटीज डैपोसिपशन फंड ...	३०४८६३७० रु०
औसत रेट ब्याज जो इस कम्पनी ने १९२९ में कमाया	६-२-१०

ता०__________

सनलाइफ ऐश्योरैन्श कम्पनी औफ कैनाडा के जावे

इस तरह कार्ड को लिख कर सनलाइफ के दफ्तर भेज दें।

____

____

____

कृपया आप २० वर्ष की एनडौमेन्ट पालिसी की तफसील भेज दें इस शर्त पर कि मुझ पर कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

नाम__________

पता__________

कारोबार__________

जन्म तिथि__________

सन लाइफ ऐश्योरैन्स कम्पनी आफ कैनाडा के पास सारी आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाली पालिसियां हैं।

यह सबसे बड़ी व कुशल कम्पनी इस समय भारतवर्ष में है। विशेष परिचय इस फ्लेपर पढ़ियेगा। आपका शुभ चिन्तक—

एच० डी० उपाध्याय

एम० एस० सी०

वाइसराय रोड, देहरादून।

ठा० प्रतापसिंह नेगी के प्रबन्ध से अभय प्रेस देहरादून में मुद्रित।